हिन्दी विभाग
स्नातकोत्तर द्वितीय सत्रार्द्ध
पत्र संख्या-06

दिनांक
19/09/2020

मीरा की पदों की व्याख्या

पद :-1.

आली रे, मेरे नैनन बान पड़ी ।
चित चढ़ी मेरे माधुरी मूरत, उर बिच आन अड़ी ।
कब की ठाढ़ी पंथ निहारूं, अपने भवन खड़ी ?
कैसे प्राण पिया बिन राखूं, जीवत मूल जड़ी ?
मीरा गिरधर हाथ हिन्दी बिकानी, लोग कहैं बिगड़ी ।।

व्याख्या :- कृष्ण प्रेम में अनुरक्त मीरा अपनी व्याकुलता व्यक्त करती हुई कहती है कि हे सखी, मेरे नैनों में कृष्ण का प्रेम बाण के सदृश्य चुभ रहा है और मेरे नयन निरंतर प्रियतम श्री कृष्ण की बाट जो रहे हैं। मेरे हृदय के बीच में आकर श्रीकृष्ण के प्रेम का बान इस प्रकार पर अड़ गया है कि हटाए नहीं हटता। मेरे मन में श्री कृष्ण की मोहनी मूर्ति इस प्रकार अंकित हो गई है कि वह मिटाने नहीं मिटती । अपने प्रियतम के प्रेम में मैं इतनी व्याकुल हो गई हूँ कि अपने भवन पर खड़ी होकर निरंतर महल की ओर आने वाले पंथ को निहारती रहती हूँ। ऐसी स्थिति में मैं अपने प्रियतम के बिना अपने प्राणों को किस प्रकार क्या कर रखूं क्योंकि मैं तो जीवित रहते हुए भी जड़ के समान हो गई हूँ। मीरा कहती है कि इतना ही नहीं मैं अपने श्री कृष्ण के हाथों पूर्णतः बिक चुकी हूँ अर्थात् अपना सर्वस्व उस पर न्योछावर कर चुकी हूँ किन्तु लोग मेरे इस प्रेम को नहीं समझ पाते और मुझे

बिगड़ी हुई कह कर मेरा तिरस्कार करते हैं।
(आली- सखी, बाण - आदत, उर - हृदय, ठाढ़ी,ठाड़ी-खड़ी, हिवड़ा - हृदय, अणी- अनी, नेक, मूर,मूल - जड़, बिकानी, बिकाणी - बिक गई, पूर्णतः समर्पित हो गई, बिगड़ी - पथ भ्रष्ट हो गई)

पद:- 2.

म्हाँ गिरधर आगाँ नाच्याँ री,
णाच णाच म्हाँ रसिक रिझावाँ, प्रीत पुरातन जाँच्याँ री।
स्याम प्रीत री बाँधि घूँघर्याँ मोहण म्हारो साँच्याँ री।
लोक लाज कुलरा मरजादाँ जगमाँ णेकणा राख्याँ री।
प्रीतम पल छब णा बिसरावाँ, मीराँ हरि रँग राच्याँ री॥

(म्हाँ - मैं, रसिक - कृष्ण, कुलरा - कुलकी, राच्याँ - रंग जाना)

व्याख्या:- प्रस्तुत पद में मीराबाई ने अपने आप को श्री कृष्ण के प्रेम में पूर्णतः अनुरक्त दिखाया है। अपने आराध्य श्री कृष्ण के परम सौन्दर्य के सम्मुख मीरा मस्त होकर नाच उठती है। इस पद में मीरा की वे भावनाएँ मुखरित हुई हैं जिसकी संसार उपेक्षा करता है। मीराबाई की अपने आराध्य श्री कृष्ण के प्रति प्रेम किसी भी अलौकिक नियम से ऊपर उठा हुआ है।

मीराबाई श्री कृष्ण के प्रेम में डूबी हुई हैं और एक प्रेमोन्नत प्रेमिका की तरह वह कहती है कि मैं अपने गिरधर अर्थात श्री कृष्ण के सम्मुख नाचूंगी। मैं उनके सम्मुख नाच-नाच कर उन्हें भी रिझाऊँगी

और इस क्रम में अपने प्रेमी मन को भी जाचूंगी। आगे मीरा कहती हैं कि वे अपने पैरों में प्रेम की प्रीत का घुंघरू बांधेगी और सुरत की कछनी अर्थात् अपनी साड़ी को धोती की तरह पहनूंगी। प्रेम की पराकाष्ठा को व्यक्त करते हुए मीराबाई आगे कहती हैं कि मैं इस संसार के लोक-लाज और अपने कुल की मर्यादा का जरा भी ध्यान नहीं रखूंगी तथा प्रियतम के पलंग पर जा बैठूंगी और उसी के रंग में पूर्णतः रंग जाऊंगी।

प्रस्तुतकर्ता :-

दिनांक
14/08/2020

बेनाम कुमार (अतिथि शिक्षक)
हिन्दी विभाग
राज नारायण महाविद्यालय हाजीपुर
(BRABU MUZAFFARPUR)
मो० नं० - 8292277041
ईमेल :- benamkumar18@gmail.com